श्री त्रिकाल चौबीसी विधान

रचयिता
मुनि श्री सुव्रतसागर जी महाराज

प्रकाशक
जैनोदय विद्या समूह

- कृति : त्रिकाल चौबीसी विधान
- आशीर्वाद : आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी महाराज
- रचयिता : मुनि श्री १०८ सुव्रतसागरजी महाराज
- संयोजन : ब्र. संजय भैयाजी
- प्रसंग : १८वाँ दीक्षा दिवस
- संस्करण : प्रथम, २०१६
- आवृत्ति : ११००
- लागत मूल्य : १०/-
- प्राप्ति स्थान : ब्र. संजय भैयाजी, मुरैना
  94251-28817
- पुण्यार्जक : श्री महेन्द्रकुमार जैन भूसा वाले
  अध्यक्ष दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पजनारी जी
  बण्डा, म.प्र. मोबा. - ९८९३७५३२७०
- मुद्रक : विकास आफसेट, भोपाल

श्री त्रिकाल चौबीसी समुच्चय पूजन

(दोहा)

तीनकाल के जिनवरा, पूज्य बहत्तर ईश।
क्रम-क्रम से व साथ में, जिन्हें नवायें शीश॥
मंद बुद्धि अल्पज्ञ हम, जिन-शासन के दास।
सादर नमोस्तु कर उन्हें, पायें निज संन्यास॥

(भुजङ्गप्रयात)

सदा धर्म का चक्र दोड़े जहाँ पे, परमपूज्य तीर्थेश होते वहाँ पे।
सभी को दया दे सम्भाला जिन्होंने, किये साधना मोक्ष पाया उन्होंने॥
बुरा भाग्य दुर्भाग्य कैसा हमारा, उन्हीं ने हमें त्याग शुद्धात्म धारा।
अहोभाग्य सौभाग्य फिर भी हमारा, उन्हें याद करके उन्हीं को पुकारा॥
रचा अर्चना फर्ज हमने निभाया, रहें आत्म सम्पत्ति में भाव भाया॥

(दोहा)

पूज्य बहत्तर नाथ की, अगर कृपा हो जाए।
बाल न बाँका हो सके, भक्त शीघ्र तर जाए॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र अवतर-अवतर.....।
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः....।
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र मम सन्निहितो.....।

(पुष्पांजलिं....)

पुनर्जन्म होना पुनर्मृत्यु होना, पुनर्गर्भ में तो नवों माह सोना।
चले जिन्दगी भर यही रोना-धोना, यही वेदना तो हमें रोज ढोना॥
इसी वेदना से ना रक्षा कहीं हो, इसी वेदना की दवा तो तुम्हीं हो।
इसे त्याग तुम सम चिदानंद पायें, अतः कर नमोस्तु तुम्हें जल चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं....।

कहीं कामना है कहीं ताड़ना है, धधक सी रही चित्त में वासना है।
इसी से न शीतल हुई चेतना है, हुई लुप्त सी विश्व में साधना है॥
तभी रोज झुलसे कली चेतना की, इसी को खिलाने प्रभो अर्चना की।
इसे आप सम रोज हम भी खिलायें, अतः कर नमोस्तु सुगंधी चढ़ायें॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं....।

पिये मद्य लंगूर तो हाल क्या हो, उछल कूद से हाल बेहाल सा हो।
यथा चित्त को वित्त विक्षत बनायें, तुम्हें भूलकर ठोकरें खूब खायें॥
नहीं चाहिए पाप की राजधानी, हमें चाहिए आप सी जिंदगानी।
हमें आप संपूर्ण सिद्धि दिलायें, अतः कर नमोस्तु ये अक्षत चढ़ायें॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्....।
पिता पुत्र के हाथ थामें चलाये, सभी राह के कीच काँटे हटाये।
उजड़ते घरों को पुनः जो वसाते, न आसूँ बहें सो गले से लगाते॥
हमारे सभी कीच काँटे हटालो, जगत पूज्य बापू गले से लगालो।
हमें आप संतान अपनी बनायें, अतः कर नमोस्तु सुमन को चढ़ायें॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं....।
प्रभु को अगर चाहते आप पाना, कभी संकटों से नहीं भाग जाना।
करो रोज पूजा पढ़ो जैन गीता, क्षुधा को मिटाने चखो आत्म मीठा॥
हमारी क्षुधा वेदना को मिटा दो, हमें भी रसीला निजी रस पिला दो।
हमें षट्-रसी व्यंजनों से बचायें, अतः कर नमोस्तु ये व्यंजन चढ़ायें॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं....।
जमाना सभी की सदा राह रोके, किसी न किसी विध निजी राय रोपे।
प्रभु आपने तो न थोपा न रोका, सही मार्ग दो पर कभी दो न धोखा॥
पुजारी अभी तो हुये हम तुम्हारे, कभी न कभी आप होंगे हमारे।
चलें पंथ निर्ग्रन्थ अरहंत पायें, अतः कर नमोस्तु ये दीपक जलायें॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं....।
प्रभु वन्दना से अशुभ भाव स्वाहा, भरे पुण्य का खूब भण्डार आहा।
यही पुण्य संसार के भोग देता, यही वीतरागी महा योग देता॥
हमारी यही आप से प्रार्थना है, हरो कोहरा कर्म का जो घना है।
हमें वीतरागी दिगम्बर बनायें, अतः कर नमोस्तु दशांगी चढ़ायें॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं....।
करे कार्य कोई यहाँ जो हमारा, उसे रोज का रोज देते गुजारा।
किसी ने अगर रोज पूजा तुम्हीं को, मिलेगा नहीं क्या सभी कुछ उसी को॥
यही द्वार साँचा जहाँ में कहाता, खजाने सभी मुक्त हाथों लुटाता।
प्रभु आप हम पर खजाने लुटायें, अतः कर नमोस्तु तुम्हें फल चढ़ायें॥
ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं....।

(ज्ञानोदय)

घी मिश्री मेंदा ये तीनों, मात्रा में जब उचित पके।
इष्ट-मिष्ट स्वादिष्ट शिष्ट वो, हलुवा तन को पुष्ट रखे॥
यूँ ही तीन काल के प्रभु की, कृपा अगर हो जाये तो।
इष्ट-मिष्ट स्वादिष्ट आतमा, प्रभु जैसी बन पाये हो॥
रत्नत्रय का हलुवा प्यारा, है अनमोल खजाने सा।
प्रभु-भक्ति से उसे बना लो, तप से खूब पकाने का॥
चर्या करके उसे चबायें, उसे पचाये निज चिंतन।
यह आध्यात्मिक मिश्रण पाने, द्रव्यों का मिश्रण अर्पण॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

तीन काल में गर्भ के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भमङ्गलमंडिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

तीन काल में जन्म के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री जन्ममङ्गलमंडिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

तीन काल में तपों के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री तपोमङ्गलमंडिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

तीन काल में ज्ञान के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री ज्ञानमङ्गलमंडिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

तीन काल में मोक्ष के, होते जो कल्याण।
त्रयकालिक चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री मोक्षमङ्गलमंडिताय त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

(जाप्य)

ॐ ह्रीं श्री णमो अरिहंताणं श्री त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

भूत भविष्यत आज के, चित चैतन्य मुकाम।
जयमाला के पूर्व में, जिन को नम्र प्रणाम॥

(चौपाई)

जय-जय श्री निर्वाण जिनन्दा, जय-जय सागर प्रभु जिन-चन्दा।
जय-जय महासाधु संन्यासी, जय-जय विमल प्रभु अविनाशी॥१॥

जय-जय श्रीधर निज श्रीधारी, जय-जय सुदत्त दान दातारी।
जय-जय अमल प्रभु अरिहन्ता, जय-जय प्रभु उद्धर भगवन्ता॥२॥

जय-जय अंगिर भाग्य विधाता, जय-जय सन्मति सन्मति दाता।
जय-जय सिन्धु जिनेश्वर स्वमी, जय-जय कुसुमांजलि नमामी॥३॥

जय-जय प्रभु शिवगण सिद्धेशा, जय-जय प्रभु उत्साह जिनेशा।
जय-जय ज्ञानेश्वर शिवज्ञानी, जय-जय परमेश्वर प्रणमामी॥४॥

जय-जय विमलेश्वर वन्दामी, जय-जय पूज्य यशोधर ध्यानी।
जय-जय पूज्य कृष्णमति कुन्दन, जय-जय ज्ञानमति जिन नन्दन॥५॥

जय-जय शुद्ध शुद्धमति साधन, जय-जय श्री श्रीभद्र परमधन।
जय-जय श्री अतिक्रान्त सहारे, जय-जय शान्तानाथ हमारे॥६॥

जय-जय ऋषभ जिनेश नमोस्तु, जय-जय अजित अरीश नमोस्तु।
जय-जय शंभवनाथ नमोस्तु, जय अभिनंदननाथ नमोस्तु॥७॥

जय-जय सुमति स्वभाव नमोस्तु, जय-जय पद्म जिनेन्द्र नमोस्तु।
जय-जय नाथ सुपार्श्व नमोस्तु, जय-जय चन्द्र चकोर नमोस्तु॥८॥

जय-जय सुविधि सहाय नमोस्तु, जय-जय शीतलनाथ नमोस्तु।
जय-जय श्रेयांसनाथ नमोस्तु, जय-जय वासुपूज्य नमोस्तु॥९॥

जय-जय विमल विनम्र नमोस्तु, जय-जय नाथ अनंत नमोस्तु।
जय-जय धर्म धनीश नमोस्तु, जय-जय शांति शांति नमोस्तु॥१०॥

जय-जय कुन्थुनाथ नमोस्तु, जय-जय श्री अरनाथ नमोस्तु।
जय-जय मल्लिनाथ नमोस्तु, जय मुनिसुव्रतनाथ नमोस्तु॥११॥

जय-जय प्रभु नमिनाथ नमोस्तु, जय-जय नेमिनाथ नमोस्तु।
जय-जय पारसनाथ नमोस्तु, जय-जय श्री महावीर नमोस्तु॥१२॥

जय-जय श्री महापद्म नमोस्तु, जय-जय श्री सुरदेव नमोस्तु।
जय-जय देव सुपार्श्व नमोस्तु, जय-जय स्वयंप्रभुजी नमोस्तु॥१३॥

जय सर्वात्म भूत नमोस्तु, जय-जय देवपुत्र सु-नमोस्तु।
जय-जय जिन कुलपुत्र नमोस्तु, जय-जय आप्त उदंक नमोस्तु॥१४॥

जय-जय प्रोष्ठिल पूज्य नमोस्तु, जय-जय कीर्तिकंत नमोस्तु।
जय मुनिसुव्रत देव नमोस्तु, जय अर-अप्तमनाथ नमोस्तु॥१५॥

जय-जय श्री निष्पाप नमोस्तु, जय-जय सु-निष्कषाय नमोस्तु।
जय-जय विपुल विराग नमोस्तु, जय-जय निर्मलनाथ नमोस्तु॥१६॥

जय-जय चित्रगुप्त सु नमोस्तु, जय-जय समाधिगुप्त नमोस्तु।
जय-जय स्वयंभू जी नमोस्तु, जय-जय अनिवर्तक जी नमोस्तु॥१७॥

जय-जय श्री जयदेव नमोस्तु, जय-जय जिनवर विमल नमोस्तु।
जय-जय देवपाल सु नमोस्तु, जय-जय अनंतवीर्य नमोस्तु॥१८॥

(घत्ता)

तीनों कालों की, जिन चौबीसी, मोक्षमहल के, पट खोलें।
उनके जो अनुचर, पाते निज घर, भक्ति भजन कर, जय बोलें॥
यह भाव बनाके, अर्घ्य सजाके, शीश झुकाते, हम तुमको।
शास्वत् निज आतम, हे! परमातम, झट अपने सम, दो हमको॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकाल सम्बन्धि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

त्रयकालिक जिनवर करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, त्रयकालिक जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

श्री भूतकाल तीर्थंकर पूजन

(दोहा)

भरतक्षेत्र के भूत के तीर्थंकर चौबीस।
भक्ति भाव में लीन हो, भक्त झुकायें शीश॥
दर्शन कर पूजन करें, मिले मुक्ति बन शिष्य।
मिले भूत हम को नहीं, प्रभु सम मिले भविष्य॥

(सखी)

जो भूतकाल में अपने, सब पाप भूत को भूले।
बन पुण्यफला अरहंता, फिर मुक्ति करों में झूले॥
ऐसे चौबीस जिनन्दा, मंगलमय मंगलकारी।
हम करें नमोस्तु उनको, जय हो हे नाथ तुम्हारी॥

(दोहा)

अर्जी सुनकर कीजिए, भक्तों का इक काम।
प्राप्त करें भूतार्थ को, जिसको नम्र प्रणाम॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र अवतर-अवतर......।
ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः....।
ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र मम सन्निहितो.....।

(पुष्पांजलिं....)

मृग-तृष्णा जल का सिंचन, दे मूर्च्छा की बेहोशी।
तब लुटे-पिटे से हम हैं, सबकी नजरों में दोषी॥
मारो जिन-ज्ञान के छींटे, तो होश आए प्रभु हमको।
हे ! भूतकाल के जिनवर, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं....।

सूरज की दूर चमक में, जल के भ्रम में मृग जलता।
थक-थक कर मरता लेकिन, हो प्राप्त नहीं शीतलता॥
दो चरण-शरण का चन्दन, तो हो शीतलता हमको।
हे ! भूतकाल के जिनवर, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं....।

जो चाहें हम न पायें, वह विखरे जिसे सँवारा।

वह रूठे जिसे मनायें, सो प्रभु अब तुम्हें पुकारा॥
सब कमियाँ हरो हमारी, दो अक्षय करुणा हमको।
हे ! भूतकाल के जिनवर, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्....।

हम कामभोग के वश हो, लज्जा कई बार गँवाये।
पर हाय हमारी किस्मत, अस्मत भी बचा न पाये॥
अब लाज आपके हाथों, निज पुष्प खिला दो हमको।
हे ! भूतकाल के जिनवर, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं....।

सागर तृष्णा मरघट सम, अज्ञान चखा नित हमने।
वह ज्ञान चखें हम जिसका, प्रभु! सागर पाया तुमने॥
हो रोज भोज आतम का, वह मौज मिले अब हमको।
हे ! भूतकाल के जिनवर, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं....।

ये दीप जलाया हमने, प्रभु तेरा दर्शन करने।
प्रभु आप ज्ञान किरणें दो, जिन तत्त्व प्रशंसा करने॥
निज ज्ञान ज्योति अब प्रगटे, आशीष मिले यह हमको।
हे ! भूतकाल के जिनवर, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं....।

जो ढोल दूर के बजते, या दृश्य सुहावने लगते।
ये काया वही जलाये, जो अपने जैसे लगते॥
ना जलें गुमें कर्मों में वह आत्म शक्ति दो हमको।
हे ! भूतकाल के जिनवर, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्टकर्म दहनाय धूपं....।

जब वन में बसंत आये, तो वन जन-मन खुश होते।
पर काल गाल जब भरता, तो शीघ्र उजड़ हम रोते॥
अब संत साधु बन विचरें, वह समता फल दो हमको।
हे ! भूतकाल के जिनवर, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो महामोक्षफल प्राप्तये फलं....।

ज्यों भूत भुलाया तुमने, यों हमको नहीं भुलाना।
ज्यों कर्म रुलाये तुमने, यों हमको नहीं रुलाना॥
ज्यों दुनियाँ तज दी तुमने, यों हमको ना तज जाना।
ज्यों मुक्ति रमा अपनाई, इस काबिल हमें बनाया॥
जैसे तैसे कैसे भी, मंजूर करो यह अरजी।
निज जिन का भेद मिटे अब, ऐसी छोटी सी अरजी॥
यह अर्घ्य करें हम अर्पण, नजदीक बिठा लो हमको।
हे ! भूतकाल के जिनवर, हम करें नमोस्तु तुमको॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

भूतकाल में गर्भ के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं श्री गर्भमङ्गलमंडिताय भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

भूतकाल में जन्म के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमंडिताय भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

भूतकाल में तपों के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमंडिताय भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

भूतकाल में ज्ञान के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमंडिताय भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

भूतकाल में मोक्ष के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमंडिताय भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

जयमाला

(दोहा)

इस अपार संसार के, तारणतरण जहाज।
प्रभु तीर्थंकर तीर हैं, जिनको नमोस्तु आज॥
वीतकाल के नाथ जो, वीतराग भगवान।
सारभूत जिनका करें, जिन पूजन गुणगान॥

(ज्ञानोदय)

कालचक्र तो सदा घूमता, सूरज चाँद सितारे भी।
पानी हवा सभी तो घूमें, मौसम मेघ बहारें भी॥
शायद इनके अनुचर बनकर, नित संसार चक्र घूमें।
अतः सभी संसारी प्राणी, कर्म चक्र द्वारा घूमें॥१॥

लेकिन जिसने धर्मचक्र को, आत्म धर्म को अपनाया।
वह संसार चक्र से सुलझा, सिद्धचक्र में वह आया॥
भूत भविष्यत वर्तमान में, तीर्थंकर चौबीसी हो।
जिनकी पूजा अर्चा करके, आतम निज की जिन सी हो॥२॥

लेकिन हम भक्तों की आतम, डूब रही या भटक रही।
अब तक हमको मिली ना आतम, जबकि वह तो निकट रही॥
अपनी-अपनी हो ना पाई, पर वस्तु क्या अपनी हो।
फिर भी पर में उलझ रहे हम, यही बड़ी हैरानी हो॥३॥

पर पर में हम तत्पर रहकर, कष्ट विघ्न गम दुख सहते।
पर का कार्य बनाने को हम, भूख प्यास सब कुछ सहते॥
दौड़ धूप दिन रात मचाते, जैसे-तैसे जी लेते।
भले रहे प्रतिकूल दशा पर, होंठ धैर्य से सीं लेते॥४॥

मान और अपमान सभी कुछ, हो हैरान सहन करते।
जीत-हार तानो-बानों से, हो विद्रूप रंग भरते॥
कभी शेखचिल्ली सम बनकर, निद्रा में भी जाग रहे।
कभी पकड़ने छाया माया, आकुल व्याकुल भाग रहे॥५॥

आगमोक्त निष्कर्ष यही है, पर की तत्परता छोड़ो।
भूतकाल सम जिनवर बनने, उनसे भी नाता जोड़ो॥
जैसा नाता पर से जोड़ा, ऐसा प्रभु से तो जोड़ो।
फिर कल्याण शीघ्र ही होगा, पर की यात्रा तो मोड़ो॥६॥

पर की यात्रा मोड़ सकें हम,जब यह भाव हुआ मन में।
तो गुणगान किया यह हमने, आन पड़े प्रभु चरणन में॥
अब तो नाथ हमारी सुनलो, क्यों हमसे तुम रूठ गये।
तुम रूठे तो दुनियाँ रूठी, सपने सारे टूट गये॥७॥

सब जग रूठे तुम ना रूठो, यही भाव बस अपना है।
आप हमारे हो जाओ तो, सारा जग फिर अपना है॥
जग से क्या लेना देना है, तुम से काम हमारा है।
हमें डुबाओ या फिर तारो, भगवन् काम तुम्हारा है॥८॥

हमें पूर्ण विश्वास यही है, डुबा न हमको पाओगे।
भूत भुलाया भले आपने, हमें भुला ना पाओगे॥
कर्म रुलाये भले आपने, हमें रुला ना पाओगे।
आज नहीं तो कल तारोगे, अपने पास बुलाओगे॥९॥

(दोहा)

तार सको तो तार दो, मुनि 'सुव्रत' की नाव।
भक्त करें हम प्रार्थना, दे दो अपनी छाँव॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

अर्घ्यावली

(सखी)

(१. श्री निर्वाणनाथ जी)

निर्वाण नाम को सार्थक, प्रभु तुमने शीघ्र बनाया।
तब ही सब कर्म नशाके, निर्वाण मोक्ष पद पाया॥
हम तन का बाण नशाके, निर्वाण सुखी पद पायें।
तब ही निर्वाण प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री निर्वाणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२. श्री सागरनाथ जी)

ज्यों रत्न राशि सागर में, मिलती अनमोल निधि है।
यों सागरनाथ प्रभु में, रत्नत्रय की सन्निधि है॥
वह सागर सम रत्नत्रय, हम पाने को ललचायें।
तब ही सागर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्रीसागरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(३. श्री महासाधु जी)

यूँ भी इस दुनियाँ में तो, है दुर्लभ साधु स्वरूपा।
फिर महासाधु प्रभु बनना, है अति दुर्लभ जिनरूपा॥
सिंह चर्या जैसे साधु, बनकर हम आतम ध्यायें।
सो महासाधु जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री महासाधु जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(४. श्री विमलप्रभ जी)

सिद्धातम जैसी आतम, मैली कर्मों के मल से।
वह शुद्ध विमलप्रभ करके, जा मिले मुक्ति मंजिल से॥
हम विमल बनें गल हरके, कुन्दन सी आतम पायें।
सो पूज्य विमलप्रभ जिन को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री विमलप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(५. श्री श्रीधर जी)

जो जड़ धन शिर पर रखते, सामान्य वही जन होते।
जो जड़ धन के शिर पर हों, प्रभु श्रीधर वो जिन होते॥

अब चेतन धन को पाने, हम जड़ धन को तज पायें।
तब ही श्रीधर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्रीश्रीधर जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(६. श्री सुदत्तनाथ जी)

क्या लेन-देन अपना पर, जग लेन-देन से चलता।
जो निज पर रत्नत्रय है, वह सुदत्त प्रभु से मिलता॥
जग लेन-देन हम तज के, बस तेरे ही हो जायें।
तब ही सुदत्त जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री सुदत्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(७. श्री अमलप्रभ जी)

तज द्रव्य भाव नो कर्मा, निर्लिप्त अवस्था पाई।
हैं पूज्य अमलप्रभ वो ही, निज निर्मलता अपनाई॥
ज्यों कमल अमल जल में त्यों, निर्लिप्त दशा हम पायें।
सो पूज्य अमलप्रभ जिन को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री अमलप्रभ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(८. श्री उद्धर नाथ जी)

सर्वोच्च हुये जो जग में, वो हैं उद्धर प्रभु स्वामी।
छू देख सकें न जिनको, बस बारम्बार नमामि॥
अब अपने पास बुलालो, हम लोक शिखर पर आयें।
तब ही उद्धर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री उद्धरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(९. श्री अंगिरनाथ जी)

जो सद्गुरु परम वो पाये, सिद्धों का शहर सुहाना।
वो अंगिर स्वामी हमको, जल्दी उस देश बुलाना॥
प्रभु करें हमारी रक्षा, हम ऐसी आश लगायें।
तब ही अंगिर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री अंगिरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१०. श्री सन्मतिनाथ जी)

जग की सब मतियाँ गतियाँ, जो हरकर सन्मति पाये।
जो पंचमगति में शोभें, जो सन्मति शुद्ध बनायें॥

हम हरें कुमति दुर्गति को, निज रसानुभूति पायें।
तब ही सन्मति जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री सन्मतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(११. श्री सिन्धुनाथ जी)

जो अनन्त हैं सिन्धुसम, गंभीर मधुर हितकर हैं।
जिन इन्दु सिन्धुसम दाता, प्रभु सिन्धु नाम जिनवर हैं॥
अब क्षार सिन्धुसम तजके, हम आतम क्षीर बहायें।
जो सिन्धु नाथ जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री सिन्धुनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१२. श्री कुसमांजली नाथ जी)

ज्यों कुसुम खिलें काँटों में, ज्यों तपे आग में कुन्दन।
ऐसे प्रभु कुसमांजलि हैं, हो जिन्हें कोटिशः वन्दन॥
हम सुविधा-दुविधा पल में, कुसुमों सम कुन्द खिलायें।
तब ही कुसमांजलि प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री कुसमांजलिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१३. श्री शिवगण नाथ जी)

जो शुद्ध आत्मा अपनी, वह सिद्ध राजधानी हो।
उन सिद्धचक्र शिवगण को, वंदन में क्या हानि हो॥
उन शिवगण जिनेन्द्र की हम, चरणों की धूलि पायें।
तब ही शिवगण जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री शिवगणनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१४. श्री उत्साह नाथ जी)

उत्साह रखें जो दिल में, धर नेक इरादे साँचे।
उत्साहनाथ वो बनते, जिनका यश दुनियाँ वाँचे॥
उत्साह राह में रखकर, हम कभी नहीं घबरायें।
तब ही उत्साह प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री उत्साहनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१५. श्री ज्ञानेश्वर नाथ जी)

जितने जग में गुण दिखते, वे ज्ञान महल में रुकते।
उनके प्रभु हैं ज्ञानेश्वर, जिनको हम बच्चे झुकते॥

ज्ञानेश्वर की गोदी में, हम बच्चे भी इठलायें।
तब ही ज्ञानेश्वर प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री ज्ञानेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१६. श्री परमेश्वर नाथ जी)

जो देवों के भी देवा, जो नाथों के भी नाथा।
वे परम पूज्य परमेश्वर, उनसे है अपना नाता॥
उनके ही खातिर हम तो, झूठे संबंध नशायें।
सो परमेश्वर जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री परमेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१७. श्री विमलेश्वर नाथ जी)

जो स्वपर प्रकाशी आतम, वह सबसे निर्मल सुन्दर।
विमलेश्वर उसके स्वामी, सिद्धेश्वर पूज्य दिगम्बर॥
हम विमल सरोवर जैसी, झिलमिल आतम झलकायें।
तब ही विमलेश्वर प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री विमलेश्वरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१८. श्री यशोधर नाथ जी)

जो ख्याति लाभ पूजायें, सब जिन को शीश झुकायें।
वे पूज्य यशोधर जिन के, यश से हम भी यश पायें॥
यश धारण हम भी करके, निज को निज में प्रकटायें।
सो पूज्य यशोधर प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री यशोधरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१९. श्री कृष्णमति नाथ जी)

जो कर्म कालिमा काली, जिनने पूरी हर डाली।
वे पूज्य कृष्णमति जिनवर, पाये हैं मुक्ति निराली॥
वह मुक्ति निराली पाने, हम भक्ति हिलोरें पायें।
सो पूज्य कृष्णमति प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री कृष्णमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२०. श्री ज्ञानमति नाथ जी)

मन में उपजे वो मति हो, वह सुधरे जब संगति हो।
सर्वज्ञ पूज्य पद दें वो, तो पूज्य ज्ञानमति मति हो॥

हम रहे अल्पमति भोले, क्या उनको गीत सुनायें।
सो पूज्य ज्ञानमति प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री ज्ञानमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२१. श्री शुद्धमति नाथ जी)

जो शुद्ध बुद्ध चेतन है, वो अपराजित सुख शाला।
वो प्राप्त शुद्धमति करके, प्रभु पाए मुक्ति वरमाला॥
हो मुक्ति वधू नत-नयना, हम ऐसे स्वप्न सजायें।
सो पूज्य शुद्धमति प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री शुद्धमतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२२. श्री श्रीभद्रनाथ जी)

जिस कुल में संत जनमते, या संतों की हो सेवा।
श्रीभद्र जन्म ले उसमें, बन गये देव-अधिदेवा॥
हम समंतभद्र सम बनके, श्रीभद्रनाथ बन जायें।
तब ही श्रीभद्र प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री श्रीभद्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२३. श्री अतिक्रान्त नाथ जी)

जो लाँघे जग सीमायें, पर आतम लाँघ न पाये।
अतिक्रांतनाथ वे बनकर, शुद्धातम रूप सजाये॥
हो विश्वपूर्ण मर्यादित, हम यही भावना भायें।
तब ही अतिक्रांत प्रभु को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री अतिक्रांतिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२४. श्री शांतानाथ जी)

जो प्रथम संत मुनि बनके, जिन शांति सुधा बरसाये।
जो भक्ति मुक्ति अंकुर दे, वो शांता प्रभु कहलाये॥
भव क्रांति-अशांति हरें हम, निज शांत रूप प्रगटायें।
तब ही शांता जिनवर को, करके नमोस्तु सुख पायें॥
ॐ ह्रीं भूतकालिक तीर्थंकर श्री शांतानाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(पूर्णार्घ्य)

हमने भगवान ना देखे, बस गुरुओं से है जाना।
ग्रन्थों में पढ़ा सुना है, या बिम्बों से पहचाना॥

क्या सुन्दर इनकी गाथा, क्या सुन्दर मोक्ष कहानी।
क्या सुन्दर इनकी करुणा, तब ही दुनियाँ दीवानी॥
हम तो थोड़ा ही माँगें, तुम देते भर-भर झोली।
अब इतना और करो तुम, सजवादो मुक्ति की डोली॥
कई बार सजीं हैं डोली, कितनी हुई अंतिम यात्रा।
फिर भी डोली अर्थी की, सम्पूर्ण रुकी ना यात्रा॥
थक गये बहुत हम स्वामी, भव यात्रा अब रुकवादो।
अर्थी सजने के पहले, अद्भुत डोली सजवादो॥
जो सजी कभी न उसमें, बस एक बार बिठवादो।
यह अर्घ्य और कैसे भी, हस्ताक्षर तुम करवालो॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं....।

जाप्य

ॐ ह्रीं अर्हं भूतकालिक श्री निर्वाणादि-शांतापर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।

जयमाला

(दोहा)

भूतकाल में जो हुये, चौबीसों भगवान्।
लक्ष्य जिन्होंने पा लिया, परम मोक्ष निर्वाण॥
जिनके श्री निर्वाण की, गाथा बड़ी विशाल।
जिन्हें नमन कर अब कहें, जयमाला गुणमाल॥

(हरिगीतिका)

क्या क्या हुआ है चेतना का, भूत में किसको पता।
आगे इसी का हाल क्या हो, कौन वाँचें यह कथा॥
बस एक प्राणी की कथा के आदि हैं ना अंत हैं।
उस ही कथा को पूर्ण कहने, ईश हैं ना संत हैं॥१॥

जब उस कथा को वाँचने में, कष्ट होता है अहो।
तो उस कथा को भोगने में, क्या हुआ होगा कहो॥
उस ही कथा को याद करके, रो चुके माँ बाप हैं।
उस ही कथा को देख करके, चुप हुये क्यों आप हैं॥२॥

उस ही कथा को जानने को, बोलते बच्चे यहाँ।
उस ही कथा से चाँद तारे, घूमता सारा जहाँ॥
अब तक कथा किसकी सुनाई, दूसरों की है नहीं।
यह आप की अपनी कथा पर, याद बिल्कुल है नहीं॥३॥

लेकिन जिन्होंने इस कथा को, धर्म से समझा यहाँ।
पुरुषार्थ से वह लक्ष्य साधे, कर्म में उलझे कहाँ॥
ऐसे हुये चौबीस जिनवर, इस कथा को छोड़के।
जिनको नमोस्तु हम करें, अब हाथ अपने जोड़के॥४॥

उनके बिना हर गीत अपना, है अधूरा सा लगे।
उनके बिना संगीत सपना, कौन पूरा सा लगे॥
संकल्प भी उन बिन अधूरा, है अधूरी साधना।
दिल में नहीं हैं वो अगर तो, है अधूरी भावना॥५॥

है दीप की ज्योति अधूरी, उन बिना जलती नहीं।
है मोक्ष की यात्रा अधूरी, उन बिना चलती नहीं॥
यात्रा हमारी पूर्ण होवे, बस यही है कामना।
प्रभु हों हमारे लक्ष्य केवल, पूर्ण हो यह प्रार्थना॥६॥

क्या प्राणियों का लक्ष्य जग में, क्यों जन्म लें क्यों वो मरें।
क्यों पाप या फिर पुण्य हों क्यों देह को धारण करें॥
हम क्यों उजाड़े घौंसलों को, क्यों बसायें ग्रहस्थियाँ।
उन बस्तियों में क्यों फँसें जब, शेष रहना अस्थियाँ॥७॥

जिसने किया ना लक्ष्य निश्चित, यह बड़ा अपराध है।
निश्चत करें हासिल करें तो, जिंदगी चित्बाग है॥
जब जिंदगी चित्बाग हो तो, भव कथा का अंत हो।
तीर्थंकरों सी निज कथा की, जय-जय सदा जयवंत हो॥८॥

आशीष ऐसा दीजिए हम, लक्ष्य प्रभु सा रख सकें।
प्रतिकूलताओं को सहनकर, लक्ष्य हासिल कर सकें॥
इस योग्य 'सुव्रत' बन सके कि, जय-विजय खोजे हमें।
पूजे भले यह विश्व हमको, किन्तु हम पूजें तुम्हें॥९॥

ॐ ह्रीं भूतकालिक श्री निर्वाणादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो समुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

(सोरठा)

लेकर के वरमाल, नत नयना मुक्ति हुयी।
जो गायें जयमाल, उनकी स्वयं मुक्ति हुयी॥
अतः झुका के शीश, जयमाला गाते रहें।
मिलता रहे आशीष, परमातम ध्याते रहें॥

(दोहा)

भूतकाल के प्रभु करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा.....)

कल्पवृक्ष के पुष्प, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, भूतकाल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

❑ ❑ ❑

श्री वर्तमानकाल तीर्थंकर पूजन

वृषभ अजित शंभव अभिनंदन सुमति पद्म सुपार्श्व जिन चन्द्र।
पुष्पदंत शीतल श्रेयांस जिन, वासुपूज्य श्री विमल अनंत॥
धर्म शान्ति कुन्थु अर मल्लि, मुनिसुव्रत नमि नेमि महान।
पार्श्व वीर प्रभु चौबीसों को, सादर पूजें करें प्रणाम॥

(दोहा)

हृदय कमल आसीन हों, तीर्थंकर चौबीस।
आतम परमातम बने, अतः झुकायें शीश॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र अवतर-अवतर.....।
ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः।
ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशति जिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो.....।

(पुष्पांजलिं.......)

(लय - चौबीसी पूजनवत्)

हम लाये प्रासुक नीर, प्रभु पूजा करने॥
पाने भव सागर तीर, मुनि मन सम बनने॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।

हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं...।

चन्दन सम प्रभु को धाम, चन्दन दिला रहे।
पाने चैतन्य विराम, चन्दन चढ़ा रहे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः संसारतापविनाशनाय चंदन...।

जो दे दुनियाँ के भोग, आतम स्वस्थ करें।
वो हैं पूजन के योग्य, जिसको पुंज धरें॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षातान्...।

आतम का शील स्वभाव, फूलों सा महके।
वह प्रकटे प्रभु की छाँव, पुष्प चढ़ा चहके॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं....।

करके भोजन का त्याग, प्रभु का भजन करो॥
तब ही अर्पित नैवेद्य, निज का स्वाद चखो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यः क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं....।

हम करें आरती आज, प्रभु की भली-भली।
पाने निज का साम्राज्य, आतम ज्योति जली॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोहान्धकार विनाशनाय दीपं...।

आतम पुद्गल का बंध, सारे द्वन्द करे।
प्रभु पद में खेकर गंध, ले निज गंध अरे॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।

हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं....।

तप के फल हों रसदार, मिलें विरागी को॥
हम फल लाये जिनद्वार, निज के रागी हो॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं....।

यह अर्घ्य करो स्वीकार, आतम के रसिया।
हम पायें आत्म फुहार, सींचें निज बगिया॥
तीर्थंकर प्रभु चौबीस, आत्मिक शांति भरें।
हमको दे दो आशीष, हम तो नमोस्तु करें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं...।

जयमाला

(दोहा)

तीर्थंकर चौबीस की, जयमाला के नाम।
करें नमोस्तु आज हम, सफल होंय सब काम॥

(त्रिभंगी)

जय-जय तीर्थंकर, आत्म हितंकर, वर्तमान के चौबीसों।
हैं कर्म विजेता, शिवमग नेता, जाए मिलें निज मुक्ति सों॥
भव चक्र निवारी, परिग्रह हारी, मंगलकारी, निज भोगी।
जो शीश नवाकर, प्रभु गुण गाकर, कार्य करें तो जय होगी॥

(पद्धरि)

जय धर्म धुरन्धर वृषभनाथ, जय मृत्युंजय प्रभु अजितनाथ।
जय शंभव संभव करें काम, जय अभिनन्दन आनन्द धाम॥ १॥

जय सुमति विधायक सुमतिनाथ, जय शत्रु विजेता पद्मनाथ।
जय-जय सुपार्श्व सुन्दर सुभोर, जय चन्द्रनाथ प्रभु चित्तचोर॥२॥

जय सुविधिनाथ दें सुविधिनाँव, जय शीतल प्रभु दें आत्मछाँव।
जय-जय श्रेयांस प्रभु कष्ट नाश, जय वासुपूज्य ब्रह्मा-विलास॥३॥

जय विमलनाथ हो चित बसन्त, जयजय अनन्त प्रभु हो अनन्त।
जय कर्म भर्म हर धर्मनाथ, जय शांतिप्रदाता शांतिनाथ॥४॥

जय कुन्थुनाथ करुणा निधान, जय अरहनाथ दें मुक्ति यान।
जय मल्लिनाथ हर मद विकार, जय सुव्रतप्रभु संकट निवार॥५॥

जय दुख हर्त्ता नमिनाथ नाथ, जय वीतराग प्रभु नेमिनाथ।
जय विघ्न विनाशक पार्श्वनाथ, जय रिद्धि-सिद्धि दें वीरनाथ॥६॥

(त्रिभंगी)

हे ज्ञानप्रकाशी, ब्रह्मविलासी, हम पर भी प्रभु, दया करो॥
सबको तो तारो, भाग्य सँवारो, 'सुव्रत' को प्रभु, क्यों विसरो॥
प्रभु नाम तुम्हारे, तारण हारे, बिगड़े काम, बना जायें।
प्रभु अपनी जोड़ी, किसने तोड़ी, वही बनाने, गुण गायें॥

(सोरठा)

भोग मोक्ष दें दान, तीर्थंकर चौबीस जी।
सादर करें प्रणाम, हम तो टेकें शीश भी॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

चौबीसों जिनवर करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान्॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दुःखों को मेट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

अर्घ्यावली

(१. श्री आदिनाथ जी)

(लय—माता तू दया करके.....)

जिनवर की पूजा से, सबका मंगल होता।
हम करें नमोऽस्तु तो, हर कार्य सफल होता॥

जब धर्म बिना प्राणी, कर्मों के दुख पाये।
तब वृषभनाथ स्वामी, सुख शांति धर्म लाये॥
उसने वो सब पाया, जिसने जो कुछ चाहा।
सो अर्घ्य चढ़ा हमने, तुमसे तुमको चाहा॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीआदिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२. श्री अजितनाथ जी)

जो अजितनाथ प्रभु की, बहु भक्ति करता हो।
जग मित्र बने उसका, कभी बाल न बांका हो॥
हम अंतर बाहर के, रिपु की जय चाह रहे।
सो अर्घ्य चढ़ा तुमको, तुमसे ही माँग रहे॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीअजितनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(३. श्री शंभवनाथ जी)

दुनियाँ का वैभव तो, शंभवप्रभु त्याग चुके।
जब निज में लीन हुये, तो त्रय जग आन झुके॥
फिर त्रग जग के सिर पर, प्रभु की छत्रच्छाया।
सो अर्घ्य चढ़ा तुमको, माँगें तेरी छाया॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीशम्भवनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(४. श्री अभिनंदननाथ जी)

पर के अभिनंदन से, निज खोते पर पाते।
प्रभु के अभिनंदन से, पर खोते निज पाते॥
प्रभु सा बन जाने को, प्रभु वंदन करते हैं।
सो अर्घ्य चढ़ा प्रभु का, अभिनंदन करते हैं॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीअभिनन्दननाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(५. श्री सुमतिनाथ जी)

हम रखें मोह मति को, जो राग-द्वेष देता।
तब रत्नत्रय के बिन, कब आत्म ध्यान होता॥
हे सुमतिनाथ जिनवर, प्रभु हमें सुमति देना।
हम अर्घ्य चढ़ायें तो, हमको सद्गति देना॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीसुमतिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(६. श्री पद्मप्रभ जी)

दुनियाँ के दलदल से, प्रभु दूर हुये ऐसे।
दुनियाँ में रहकर भी, हो खिलेकमल जैसे॥
सो पद्मप्रभु जैसा, बनने जग ललक रहा।
यह अर्घ्य चढ़ाया तो, परमातम झलक रहा॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीपद्मप्रभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(७. श्री सुपार्श्वनाथ जी)

प्रभु दया भाव धरके, निज आतम शृंगारें।
सो छोड़ दिया जग पर, हम तुमको स्वाकारें॥
हे सुपार्श्व प्रभु हमको, तुम नहीं भूल जाना।
हम अर्घ्य चढ़ा चाहें, बस चरण धूल पाना॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीसुपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(८. श्री चंद्रप्रभ जी)

नभ के चंदा से तो, सरवर के कमल खिलें।
लेकिन चन्दाप्रभु से, भव्यों के कमल खिलें॥
सो नभ का चंदा तज, हम तुमको पूज रहे।
यह अर्घ्य चढ़ाकर के, निज में जिन खोज रहे॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीचन्द्रप्रभजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(९. श्री सुविधिनाथ जी)

जग के रिश्ते नाते, ज्यों फूल और काँटे।
जिनमें आतम उलझी, तो मिले कर्म चाँटे॥
पर पुष्पदंत प्रभु ने, काँटे चाँटे छोड़े।
सो अर्घ्य चढ़ा सबने, सिर झुका हाथ जोड़े॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीसुविधिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१०. श्री शीतलनाथ जी)

निज कुल सिद्धि को तुम, जिन कुल के सिद्ध बने।
हम भी गुरुकुल पाके, तुम जैसे सिद्ध बनें॥
हे शीतल! प्रभु हमको, जिनकुल का दान करो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, भक्तों का ध्यान रखो॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीशीतलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं.....।

(११. श्री श्रेयांसनाथ जी)

हर मुश्किल का हल हो, हाँ! आज नहीं कल हो।
जो चुने आपका पथ, उसका चित् उज्ज्वल॥
हे श्रेयांसनाथ हर लो, हम संकट दुख को भी।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, प्रभु थामो हमको॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीश्रेयांसनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१२. श्री वासुपूज्य जी)

वो बाल ब्रह्म व्रत ले, जो निज से प्रेम करे।
अर्हन्त महन्त बने, तो मुक्ति वधू भी वरे॥
पर वासुपूज्य जैसा, अपना भी स्वयंवर हो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, यह चमत्कार कर दो॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीवासुपूज्यजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१३. श्री विमलनाथ जी)

जो देह मैल धोकर, तन को चमकाते हैं।
वो अपनी आतम को, संसारी बनाते हैं॥
पर विमलनाथ प्रभु ने, तन तज चेतन पाया।
सो अर्घ्य चढ़ा हमने, निज चेतन चमकाया॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीविमलनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१३. श्री अनन्तनाथ जी)

संसार अनंत रहा, जिसमें हैं पाप अनन्त।
इन सबको तज तुमने, पाया चैतन्य अनन्त॥
सो अनन्तनाथ स्वामी, हमको भी करो अनन्त।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, महकादो आत्म बसन्त॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीअनन्तनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१३. श्री धर्मनाथ जी)

बस एक धर्म ही हो, लेकिन बहु-मत होते।
यह तथ्य समझकर ही, संसार विगत होते॥
प्रभु धर्म धारकर ये, निज आत्म धर्म पाये।
सो अर्घ्य चढ़ा हम भी, तुम सम बनने आये॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीधर्मनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१६. श्री शांतिनाथ जी)

संसार शांति खोजें, पर कहाँ मिली शांति।
जब दर्श किया प्रभु का, तो तनिक मिली शांति।
हे शांतिनाथ स्वामी, अपने सम शांति भरो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, भक्तों की अशांति हरो॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीशान्तिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१७. श्री कुन्थुनाथ जी)

सब द्रव्य पदार्थों में, बस जीव मुख्य होता।
उस पर करुणा करके, निज आत्म सौख्य होता॥
वह कुन्थुप्रभु पाये, जिसकी अपनी इच्छा।
सो अर्घ्य चढ़ायें हम, तुम दे देना दीक्षा॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीकुन्थुनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१८. श्री अरनाथ जी)

नभ मंडल के जैसे, अरनाथ असीमित हैं।
गुणगान करें कैसे, क्योंकि शब्द तो सीमित हैं॥
फिर भी अंतिम क्षण तक, गुणगान न छोड़ेंगे।
यह अर्घ्य चढ़ा हम भी, सिद्धों तक दोड़ेंगे॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीअरनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१९. श्री मल्लिनाथ जी)

संसार जीतने को, हर व्यक्ति चाह रहा।
पर आत्म विजय करना, जिन सेवक माँग रहा॥
सो मल्लिनाथ अपना, तुम भक्त बना लेना।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, शुद्धात्म दान देना॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीमल्लिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२०. श्री मुनिसुव्रतनाथ जी)

हो भले जन्म छोटा, पर रहे सुव्रती का।
सागर जैसा जीवन, व्रत बिना रहा तीखा॥
सो सुव्रतनाथ हमें, अपने सुव्रत दे दो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम चरणों की रज दे दो॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीमुनिसुव्रतनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२१. श्री नमिनाथ जी)

जिसके मन में रहते, नमिनाथ चिदानंदी।
वह ऋद्धि-सिद्धि पाके, बनता परमानंदी॥
सो भक्तों के मन में, अपना डेरा डालो।
हम अर्घ्य चढ़ायें तुम, चैतन्य सजा डालो॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीनमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२२. श्री नेमिनाथ जी)

दुख जीवों के सुनकर, संसार-भोग छोड़े।
सो करुणानिधि तुमको, जग रोज हाथ जोड़े॥
हे नेमिनाथ तुम सम, हम अपना व्याह रचें।
यह अर्घ्य चढ़ा हम भी, तुम सम गिरनार चढ़ें॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीनेमिनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२३. श्री पार्श्वनाथ जी)

जय किया कमठ का मठ, उपसर्ग सहन करके।
सो अंदर बाहर के, रिपु झुके नमन करके॥
दो वही वज्र पौरुष, जो पारस मणि कर दे।
हम अर्घ्य चढ़ायें तू, कुछ ध्यान इधर कर दे॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीपार्श्वनाथजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२४. श्री महावीर स्वामी जी)

जो पर से सुलझ गये, वे बाजी मार गये।
जो निज में उलझ गये, वे भव से पार गये॥
वे महावीर हो तुम, प्रभु पूज्य वीतरागी।
यह अर्घ्य चढ़ा तुमसे, जिन संपत्ती माँगी॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक तीर्थंकर श्रीमहावीरजिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(पूर्णार्घ्य)

प्रभु हाथ पकड़ लो तुम, है जगत भीड़ भारी।
हम खो न कहीं जायें, ये तेरी जबाबदारी॥
यह चौबीसों प्रभु से, नित रही प्रार्थना है।
हम अर्घ्य बनें तुम सम, बस यही भावना है॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमः पूर्णार्घ्यं.....।

(जाप्य)

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्रीवृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।।

जयमाला

(दोहा)

मंगलमय मंगलकरण, वीतराग विज्ञान।
उसे नमोस्तु जिससे हुये, चौबीसों भगवान॥

(ज्ञानोदय)

आदिनाथ से वृषभनाथ तक, तीर्थंकर चौबीस रहे।
वर्तमान की चौबीसी को, भक्त झुकाते शीश रहे॥
क्योंकि इन्होंने दुनियाँ तजकर, वीतराग विज्ञान लिया।
वही रहा रत्नत्रय साँचा, धार दिगम्बर रूप लिया॥१॥
फिर अर्हंत दशा को पाकर, समवसरण में तत्त्व दिये।
कर्म ध्यान से नष्ट किये तो, नमोस्तु सारे भक्त किये॥
हम भी बनें उन्हीं के जैसे, अपना आतम प्रकटायें।
रागद्वेष को छोड़ सकें हम, निज अर्हंत रूप पायें॥२॥

सिद्धालय सी छाया पायें, दुनियाँ का भव, भ्रमण तजें।
विषय विकारों भोग नजारों, मोह वहारों में न फँसे॥
कर्म कटारों में नहिं उलझें, बस आतम में रमण करें।
वसें शीघ्र लोकाग्र शिखर पर, सिद्धों जैसे गमन करें॥३॥

अपनी केवल यही प्रार्थना, अतः आपको खोज लिया।
सभी सहारों से क्या लेना, मात्र आपको पूज लिया॥
नहीं जरूरत कुछ करने की, लिया सहारा जब तेरा।
चरणों में बस करें गुजारा, देख नजारा अब तेरा॥४॥

ज्ञान उजाला मिला आपका, यही गुजारा काफी है।
भवसागर से तिरने तेरा, एक इशारा काफी है॥
मिले ठिकाना मात्र आपका, फिर हर चीज पराई है।
'सुव्रत' ने अंतस में ऐसी, 'विद्या' ज्योति जलाई है॥५॥

(सोरठा)

आत्म बने सिद्धात्म, यही हमारी आश है।
सो भजने परमात्म, नमोस्तु अपने पास है॥

ॐ ह्रीं वर्तमानकालिक श्री वृषभादिवीरान्त चतुर्विंशतितीर्थंकरेभ्यो समुच्चयजयमाला पूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

चौबीसों स्वामी करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्प सम, पुष्पांजलि पद लाय।
भव दु:खों को मेट दो, चौबीसों जिनराय॥

(पुष्पांजलिं....)

❑ ❑ ❑

श्री भविष्यत् काल तीर्थंकर पूजन

(दोहा)

नाथ भविष्यत् काल के, प्रभु चौबीस जिनेन्द्र।
हम भी पूजेंगे उन्हें, पूजें जिन्हें शतेन्द्र॥
आगे लेकर जन्म जो, सिद्ध बनें अर्हन्त।
मनो वचन तन से उन्हें, नमन अनन्तानंत॥

(श्रग्विणी)

खोज के धर्म को पूज के धर्म को, जो बनेंगे जिनन्दा नशा कर्म को।
प्राप्त होंगे वही मोक्ष के राज को, उस दशा को नमोस्तु नमन आज हो॥
आज खोजें उन्हें आज पूजें उन्हें, वो भले दूर हैं तो नहीं गम हमें।
हम उन्हीं की तरह चेतना पाएँगे, भक्ति से हम अत: गीत भी गाएँगे॥

(दोहा)

दिव्य भाव तो है नहीं, दिव्य द्रव्य ना देह।
कृपा करो हम पा सकें, आतम द्रव्य विदेह॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र अवतर-अवतर......।
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठ: ठ:..।
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकर जिन समूह अत्र मम सन्निहितो.....।

(पुष्पांजलिं....)

आज कल और परसों कहें रोज हम, किन्तु पूजा नहीं कर सकें रोज हम।
काश! पूजा रचाते अगर रोज हम, आज होते यहाँ अर्चना योग्य हम॥
आप ही आप के त्यों सहारे हुये, हम तुम्हें पूजने को तुम्हारे हुये।
भाविकालिक प्रभो हो नमोस्तु तुम्हें, शुद्ध आतम बनें भेंट जल हो तुम्हें॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जन्मजरामृत्यु विनाशनाय जलं....।
लोक के शीश पर आप भी जाएँगे, हम वहाँ बोलिए किस तरह आएँगे।
हम विरह वेदना से जलेंगे यहाँ, फिर सुखी आप कैसे रहेंगे वहाँ॥
इसलिए छाँव में आप हम को रखो, साथ हम भी रहेंगे मजे से अहो।
भाविकालिक प्रभो हो नमोस्तु तुम्हें, शांत आतम बनें भेंट चंदन तुम्हें॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः संसारताप विनाशनाय चंदनं....।
पास हीरे नहीं रत्न आदिक नहीं, अर्चना की विधि तो पता भी नहीं।
फिर हमारे तुम्हारे मिटें फाँसले, इस तरह के हमारे नहीं हौंसले॥
वीतरागी हमें राग है आपसे, आप मिलवाइएगा हमें आपसे।
भाविकालिक प्रभो हो नमोस्तु तुम्हें, पूर्ण आतम बनें भेंट अक्षत तुम्हें॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान्....।
बाग शुद्धात्म अपना खिलाओगे तुम, उस निजानन्द में सब भुलाओगे तुम।
और निश्चित हमें भी रुलाओगे तुम, फिर महककर कहाँ चैन पाओगे तुम॥
सो गुजारिश हमें भी खिला लीजिए, पंखुड़ी एक अपनी बना लीजिए।
भाविकालिक प्रभो हो नमोस्तु तुम्हें, ब्रह्म आतम बनें पुष्प अर्पित तुम्हें॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः कामबाण विध्वंसनाय पुष्पं....।
दान दातार का हैं इसी में मजा, आप खाओ खिलाओ सभी को अहा।
और कंजूस आनन्द इसमें करें, नाहिं खाये जिये जोड़ कर सब मरें॥
तुम न बनना कृपण बनना दाता तुम्हें, भोग चेतन का करना कराना हमें।
भाविकालिक प्रभो हो नमोस्तु तुम्हें, शुद्ध नैवेद्य निज का दिला दो हमें॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यः क्षुधा रोग विनाशनाय नैवेद्यं....।
आप आतम की झिलमिल में रम जाएँगे, हम जमाने की भटकन में गुम जाएँगे।
ज्ञान ज्योति अगर आप दिखलाएंगे, हम अँधेरे से बाहर निकल आएंगे॥
हो दयालु तुम्हीं हो कृपालु तुम्हीं, आत्म निधियाँ हमारी बचा लो तुम्हीं।
भाविकालिक प्रभो हो नमोस्तु तुम्हें, ज्ञान सूरज उगे दीप अर्पित तुम्हें॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोहांधकार विनाशनाय दीपं....।

कर्म की आंधियाँ हम तरफ चल रहीं, वासना साधना को सदा छल रहीं।
आप इनसे सँभलकर निकल जाएँगे, हम इन्हीं में उलझकर तड़फ जाएँगे॥
हम जहाँ भी पुकारें तुम्हारे लिए, आप आकर सम्भालें हमारे लिए।
भाविकालिक प्रभो हो नमोस्तु तुम्हें, रूप निज का खिले धूप अर्पित तुम्हें॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अष्ट कर्म दहनाय धूपं....।
आप बारात लेकर स्वयंवर करो, मुक्तिरानी को आतम महल में वरो।
किन्तु बाराती हमको बना लीजिए, शीघ्र ऐसी ही शादी करा दीजिए॥
मुक्तिरानी से होवे परिणय कभी, योग्य इतना तो हम को बना दो अभी।
भाविकालिक प्रभो हो नमोस्तु तुम्हें, भेद-विज्ञान का फल मिले अब हमें॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो मोक्षफल प्राप्तये फलं....।
तुम रहो न रहो भक्त के हाथ में, तुम बँधो न बँधो भक्त के प्यार में।
तुम सुनो न सुनो भक्त की बात को, आइये या नहीं भक्त के द्वार में॥
किन्तु फिर भी तुम्हें भक्त तज ना सकें, आएंगे प्यार से भक्ति करते रहें।
भाविकालिक प्रभो हो नमोस्तु तुम्हें, आत्म सिद्ध मिले अर्घ्य अर्पित तुम्हें॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अनर्घपद प्राप्तये अर्घ्यं....।

पंचकल्याणक अर्घ्य

(दोहा)

भाविकाल में गर्भ के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥
ॐ ह्रीं श्री गर्भमङ्गलमंडिताय भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।
भाविकाल में जन्म के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥
ॐ ह्रीं जन्ममङ्गलमंडिताय भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।
भाविकाल में तपों के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥
ॐ ह्रीं तपोमङ्गलमंडिताय भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।
भाविकाल में ज्ञान के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥
ॐ ह्रीं ज्ञानमङ्गलमंडिताय भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

भाविकाल में मोक्ष के, पाये जो कल्याण।
जिनवर उन चौबीस को, बारम्बार प्रणाम॥

ॐ ह्रीं मोक्षमङ्गलमंडिताय भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो अर्घ्यं....।

जयमाला

(बसन्ततिलका)

जो कालचक्र चलता सबको चलाता।
वो भी निमित्त बनके भवचक्र लाता॥
जो धर्मचक्र उसमें उर धार लेंगे।
तीर्थेश कर्म हरके निज तार लेंगे॥

(ज्ञानोदय)

हुई हो रही होगी उन सब, चौबीसी त्रयकालों की।
भूत भविष्यत वर्तमान के, जिनवाणी के लालों की॥
गाथा कहना कठिन काम है, फिर भी पुण्य कमाना है।
अतः प्रथम कर उन्हें नमोस्तु, अपना भाग्य जगाना है॥१॥

पंच-पंच कल्याणक वाले, भरतक्षेत्र के तीर्थंकर।
नगर अयोध्या में सब जन्में, फिर पुरुषार्थ चार को कर॥
शाश्वत श्री सम्मेदशिखर से, फिर जाते हैं मोक्ष निलय।
भूतकाल की चौबीसी की, इसी नियम से हुई विजय॥२॥

लेकिन काल दोष के कारण, वर्तमान में रंग बदला।
पंच बालयति तीर्थंकर हो, जन्म मोक्ष का क्रम बदला॥
लेकिन आगे भाविकाल में, तीर्थंकर होंगे जो भी।
अटल नियम सिद्धान्तचक्र को, पाल मुक्त होंगे वो भी॥३॥

जन्म अयोध्या में लेकर फिर, चार-चार पुरुषार्थ करें।
कुशल राज्य संचालित करके, गृहि जीवन स्वीकार करें॥
आप बनेंगे स्वयं स्वयंभू, संयम पथ स्वीकार करें।
लौकांतिक अनुमोद करेंगे, प्रभु की जय-जयकार करें॥४॥

बैठ पालकी में जाएंगे, वन में दीक्षा वो लेंगे।
पंचमुष्ठी केशलोंच करेंगे, बेला तेला व्रत लेंगे॥
करें पारणा दीक्षा की फिर, किसी योग्य राजा के घर।
ज्ञान ध्यान तप लीन रहेंगे, फिर अपनी आतम ध्याकर॥५॥

केवलज्ञान पाएंगे जैसे, फिर अरहंत बनेंगे वो।
समवसरण में शोभित होंगे, दिव्य देशना देंगे वो॥
निश्चय और व्यवहार कथन कर, रत्नत्रय समझायेंगे।
फिर सम्मेदशिखर पर जाकर, मोक्ष अवस्था पायेंगे॥६॥

किन्तु अभी संसार चक्र में, घूमें उलझें दुख सहते।
हाय! हाय! ये कर्मचक्र क्यों, सबसे रूठे से रहते॥
जड़ कर्मों के कारण हमने, काल अनंत गवाँ डाला।
वीतरागता जाग सकी ना, राग-द्वेष विष पी डाला॥७॥

यही भविष्यत कालिक वाले, तीर्थंकर जब सोचे थे।
कर्मचक्र को धर्मचक्र से, लड़ने प्रभु तक पहुँचे थे॥
चेतन गृह में ज्ञान मूर्ति को, उच्चासन दे पूजेंगे।
आप तरें भक्तों को तारें, चिदानंद सुख भोगेंगे॥८॥

पुण्यवान धर्मी भक्तों को, सब ही जन तो तार रहे।
किन्तु आप सब को ही तारो, इससे तुम्हें पुकार रहे॥
बस इतनी सी अरज हमारी, रखना साथ हमें अपने।
माना आप नहीं पर-कर्त्ता, फिर भी पूर्ण करो सपने॥९॥

जब कुछ बुरा कार्य करना हो, तभी जरूरत ताकत की।
वर्ना जग में सब कुछ पाने, मात्र प्यार ही है काफी॥
हे ! प्यारे से परमपिता तुम, इतना प्यार हमें देना।
भले बुरे जैसे हैं 'सुव्रत', पर स्वीकार हमें लेना॥१०॥

(मालिनी)

प्रभु जिनवर गीता, कौन पूरी करेगा।
बस जय-जय बोले, प्रार्थना भी करेगा॥

इस विध वह पाये, विश्व में नाम पूजा।
जय-जय जयमाला, भक्ति में डूब तू जा॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

भाविकाल के प्रभु करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाय।
भवदुःखों को मेट दो, भाविकाल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

अर्घ्यावली

(विष्णु)

हाथ हमारे सिर पर रखकर, कहो तथास्तु हो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

(१. श्री महापद्मनाथ जी)

महापद्म पहले तीर्थंकर, आगामी कल में।
भाविकाल में यों होंगे ज्यों, पद्म खिले जल में॥
शुद्धातम का पद्म खिलायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्रीमहापद्म जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२. सुरदेवनाथ जी)

नाम आयु से जो सुर बनते, उन्हें कौन पूजें।
उन देवों के देव बनें जो, उन्हें विश्व पूजें॥
चिच्चेतन सुरदेव बनें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुरदेवनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(३. श्री सुपार्श्वनाथ जी)

तन भी सुंदर मन भी सुंदर, सुंदर सूरत तो।
शुद्ध बुद्ध खलु चिच्चदेव की, सुंदर मूरत हो॥

सुपार्श्व प्रभु सम हम बन जायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री सुपार्श्वनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(४. श्री स्वयंप्रभनाथ जी)

पूज्य बनेंगे स्वयं स्वयंप्रभ, प्रभुता को पाने।
अनन्तशक्ति सम्पन्न बनेंगे, अखण्डता पाने॥
अतुल पराक्रमधारी हम हों, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री स्वयंप्रभनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(५. श्री सर्वात्मभूतनाथ जी)

परमातम प्रभु जिनके अपने, रोम-रोम में हैं।
भूतनाथ सर्वात्मभूत वो, जिनवर अपने हैं॥
रोम-रोम में प्रभु वस जायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री सर्वात्मभूतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(६. श्री देवपुत्रनाथ जी)

देव तथा देवाधिदेव के, पुत्र नहीं होते।
देवपुत्र देवाधिदेव बन, देव पूज्य होते॥
देवपुत्र सम पुत्र बनें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री देवपुत्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(७. श्री कुलपुत्रनाथ जी)

संत बनो या संत समागम, कर कुल शुद्ध बने।
जिन कुल के यदि पुत्र बने तो, आतम शुद्ध बने॥
जिनकुल के कुलपुत्र बनें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री कुलपुत्रनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(८. श्री उदंकनाथ जी)

मोक्ष प्राप्ति को अतिशय ऊँचे, उठते ही जाना।
कर्म बन्ध हर लोक शिखर पर, जाकर वस जाना॥

निज उपलब्धि हो उदंक प्रभु, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री उदंकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(९. श्री प्रोष्ठिलनाथ जी)

जिनके अधर मधुर सुंदर हों, सरस्वती सुत हों।
प्रोष्ठिल प्रभु सम विद्यागुरुवर, जग में पूजित हों॥
अनुपम सुंदर चेतन पायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री प्रोष्ठिलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१०. श्री जयकीर्तिनाथ जी)

विजय दूसरों पर करते तो, जग-विजयी बनते।
आत्म शत्रुओं के विजयी को, जयकीर्ति कहते॥
जयकीर्तिसम कीर्ति पायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री जयकीर्तिनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(११. श्री मुनिसुव्रतनाथ जी)

हमको सुव्रत सुव्रत प्रभु दें, यही भावना है।
अपने सब व्रत सुव्रत हों बस, यही प्रार्थना है॥
हम भी मुनिसुव्रत बन जायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१२. श्री अर(अप्तम)नाथ जी)

जैसे गहरे किसी कूप का, मीठा जल होवे।
ऐसे अर प्रभु निज में डूबे, तो विधि मल धोवें॥
अप्तम जैसे हम मल धोवें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री अरनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१३. श्री निष्पापनाथ जी)

पाप छोड़ निष्पाप बनेंगे, ऐसा चिंतन हो।
पुण्यवान निष्पापनाथ सम, तो निज आतम हो॥

पाप-पुण्य से रहित बनें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री निष्पापनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१४. श्री निष्कषायनाथ जी)

आतम को कसकर दु ख दे जो, वह कषाय होती।
निष्कषाय प्रभु जैसे बनकर, क्या आतम रोती?
निष्कषाय हों बन्ध हटें सब, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री निष्कषायनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१५. श्री विपुलनाथ जी)

अतुलनीय अध्यात्म संपदा, कौन पार पावे।
विपुलनाथ सम जो प्रकटाये, वही पार पावे॥
विपुल लक्ष्मी निज धन हम पायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री विपुलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१६. श्री निर्मलनाथ जी)

भक्त और भगवान् का रिश्ता, कीच कमल जैसा।
आतम परमातम का नाता, मोक्ष महल जैसा॥
निर्मल प्रभु से नाता अब हो, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री निर्मलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१७. श्री चित्रगुप्तनाथ जी)

देख-देख तस्वीर आपकी, हम तस्वीर हुये।
ऐसे हैं प्रभु चित्रगुप्त जी, चेतन तीर्थ छुये॥
चित्तमुक्त हों चित्रगुप्त-सम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री चित्रगुप्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१८. श्री समाधिगुप्त नाथ जी)

जीवनभर जो किये साधना, शंखनाद जैसे।
और अंत में किये समाधि, हुये गुप्त ऐसे॥

हम भी बनें समाधिगुप्त-सम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री समाधिगुप्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(१९. श्री स्वयंभूनाथ जी)

खुद ही छैनी खुद ही पत्थर, खुद हि हथौड़े हो।
अपनी मूरत स्वयं बनाकर, बनें स्वयंभू हो॥
अपनी मूरत स्वयं बनायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री स्वयंभूनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२०. श्री अनिवर्तक नाथ जी)

कर्मों के अनुरूप सभी के, खुद परिणाम हुये।
अनिवर्तक प्रभु कर्म नशा के, आतमरूप छुये॥
प्रभु सम आतमराम छुयें हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री अनिवर्तकनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२१. श्री जयनाथ जी)

'ज' से 'य' मिल बने शब्द जय, जय का क्या आशय।
'ज' से जन्म नशे 'य' से यम, जय-जिनेन्द्र की जय॥
जीत हार बिन बनें सफल हम, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री जयनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२२. श्री विमलनाथ जी)

अपनी आतम दर्पण जैसी, जिसमें सब झलके।
वही विमलप्रभु पायेंगे सा, वन्दन पल-पल के॥
हम अर्हन्त दशा वह पायें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥
ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री विमलनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२३. श्री देवपाल नाथ जी)

कर पुरुषार्थ अहिंसा रूपी, जीवों को पालें।
देवपूज्य प्रभु देवपाल हैं, उनके गुण गालें॥

देवपाल-सम आज्ञा पालें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री देवपाल जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(२४. श्री अनन्तनाथ जी)

अनन्त गुण पर्याय द्रव्य में, आतम मुखिया हो।
प्राप्त अनन्त ज्ञान दर्शन हो, तो फिर सुखिया हो॥
हम दुखिया हों अनन्त सुखिया, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक तीर्थंकर श्री अनन्तनाथ जिनेन्द्राय नमः अर्घ्यं....।

(पूर्णार्घ्य)

नर-तन से पापों का नर्तन, करके नरक गये।
फिर भव-भव में नर्तन करके, अनगिन कष्ट सहे॥
रोते-रोते सोते-सोते, काल अनन्त गया।
नर-तन सार्थक कर ना पाये, घर परिवार मिला॥

जिसको हम परिवार समझते, वही रुलाते हैं।
जिसको हम संतान समझते, वही जलाते हैं॥
सुख में अपने साथ रहें सब, दुख में मुख मोड़ें।
अपने-अपने खुद को कहकर, दिल अपना तोड़ें॥

धोखों अपनों सपनों को हम, अपना ना मानें।
हमें न मानो हम तो तुमको, अपना ही मानें॥
आप हमें भी प्रभु अपना लें, ऐसी वस्तु दो।
भाविकाल के हे! तीर्थंकर, तुम्हें नमोस्तु हो॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो पूर्णार्घ्यं....।

(जाप्य)

ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि-अनंतवीर्य पर्यंत चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः

जयमाला

(दोहा)

जिनवर पद पूजा रही, सबसे उच्च महान्।
जिन जयमाला से हुआ, भक्तों का कल्याण॥
अतः भाविकालिक प्रभो, जपकर तेरा नाम।
जयमाला के गीत गा, करते नम्र प्रणाम॥

(तोटक)

प्रभु आप अनंत स्वरूप हुये, निज आतम का सुख रूप छुये।
भव की गलियाँ तुम छोड़ चले, जग के सपने सब तोड़ चले॥१॥

फिर देख चले निज के सपने, तब कर्म लगे खुद ही कपने।
निज चेतन खुद ही जाग गयी, चिर नींद तभी खुद भाग गयी॥२॥

तब ज्ञान महा रवि ऊग गया, फिर मोह महातम डूब गया।
इस भाँति हुये सपने सच ही, हम भी अब पूर्ण करें सब ही॥३॥

पर मोह हमें झकझोर रहा, सबके सपने सब तोड़ रहा।
कब चैन मिला इनसे हमको, तब माँग रहे तुमसे तुमको॥४॥

अब आप दया प्रभु जी कर दो, यह गाफिल नींद तुम्हीं हर लो।
हम देख सकें निज के सपने, फिर पूर्ण करें सबके सपने॥५॥

जलपान मिले अथवा न मिले, पर स्वप्न सही करने निकले।
जग के सब स्वप्न दिखे निशि में, निज के सब स्वप्न दिखे दिशि में॥६॥

निशि में सपने कब पूर्ण हुये, दिन में सपने सब पूर्ण हुए।
बस स्वप्न जिन्हें लखना जमता, विस्तर तकिया में मन रमता॥७॥

सपने करना साकार जिन्हें, शुभ हैं दिन-रात सदैव उन्हें।
जब स्वप्न न जीवन में रहते, वह लोग सदा मृतवत् रहते॥८॥

पर हीन परिन्दों सम तड़फें, दुख से खुद ही खुद पै भड़कें।
अब चेत उठो अय! चेतन री, तज मोह निशा की नींद बुरी॥९॥

उठना तज के जगना हमको, भव के सपने तजना हमको।
फिर चेतन के सपने लखना, इनमें दरिद्रता क्या रखना॥१०॥

सपनों के कोई दाम नहीं, सपनों के कोई नाम नहीं।
सपनों पर कोई लगाम नहीं, सपनों का कोई मुकाम नहीं॥११॥

हम देख रहे सपना इक जो, प्रभु पूर्ण करो सपना वह तो।
जब आँख खुले तब आप दिखें, गर नींद लगे तव स्वप्न दिखें॥१२॥

प्रभु से बस अपनी आँख लगे, प्रभु नाम जपत यह आँख मुचे।
हम खोल चुके तन के नयना, तुम खोल दियो अंतर नयना॥१३

ये स्वप्न हकीकत हो जायें, बस और नहीं हम कुछ चाहें।
आशीष मिले यह 'सुव्रत' को प्रभु आप हमें विद्या रथ दो॥१५॥

(सोरठा)

वे करते साकार, देख रहे जो स्वप्न को।
मिले मुक्ति का द्वार, ऐसा अपना स्वप्न हो॥
ऐसा दो आशीष, मोह नींद से जग सकें।
झुका आपको शीश, शाश्वत प्रभु पद भज सकें॥

ॐ ह्रीं भाविकालिक श्री महापद्मादि चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

भाविकाल के प्रभु करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाय।
भवदु:खों को मेट दो, भाविकाल जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

(जाप्य)

ॐ ह्रीं णमो अरिहंताणं श्री त्रयकालिक चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो नमो नमः।

महासमुच्चय जयमाला

(दोहा)

त्रयकालिक जिनराज की, पूजन शुभ जयमाल।
स्वर्ग मोक्ष शुद्धात्म दे, अतः नमन त्रयकाल॥

(ज्ञानोदय)

पाप पुण्य के कर्मचक्र में, हैं सम्पूर्ण विश्व उलझा।
मृग-तृष्णा मृग-मरीचिका के, भ्रम से कहो कौन सुलझा॥
विषय भोग अज्ञान मोह से, सबसे कम भटके प्राणी।
उससे ज्यादा प्रमाद करके, जीव तजे पथ कल्याणी॥१॥

कट्टरवादी शास्त्र ग्रंथ के, स्वार्थी अर्थ बताते जो।
उससे ज्यादा भोले मानव, भक्तों को भटकाते वो॥
सबसे ज्यादा भ्रष्ट जनों की, संगति से भटकें प्राणी।
अतः समागम उत्तम करके, सुनो समझ लो जिनवाणी॥२॥

साक्षात् प्रभु तो मिले न हमको, शास्त्रों का अभ्यास नहीं।
साँचे गुरु निर्ग्रंथ संत की, शरण नहीं संन्यास नहीं॥
अतः तीव्र कर्मोदय से हम, भ्रमते भूल-भुलैया में।
धर्मपंथ तो कुछ ना समझें, उलझे माया मैया में॥३॥

वही दूसरों को समझाते, समझ न सकते जो बातें।
तत्त्वज्ञान चारित्र नहीं पर, उपदेशों की सौगातें॥
धर्म नहीं जो उसे धर्म हम, जानबूझ कर पाल रहे।
तभी धर्म अध्यात्म तत्त्व से, अब तक तो कंगाल रहे॥४॥

किन्तु अभी भी पुण्य कर्म कुछ, शेष रहे जिनभेष मिले।
तीनकाल के विद्यमान के, बिंब ग्रंथ गुरु भेष मिले॥
सिद्धक्षेत्र निर्वाणतीर्थ भी, मंदिर मिले जिनालय भी।
व्रत चारित्र मिले संयम भी, मोक्षमार्ग रत्नत्रय भी॥५॥

अतः कहे जिनवाणी मैया, मेरे लालो जागो तो।
सब देने तैयार खड़ी मैं, श्रद्धा से बस माँगो तो॥

भूत भविष्यत वर्तमान की, मोक्ष विराजी चौबीसी।
और अनन्तानन्त जाएंगी, तीनकाल की चौबीसी॥६॥

तीनकाल में तीन लोक में, इनसा जो बनना चाहें।
तीनकाल के तीर्थंकरों को, भजो पकड़ लो जिन राहें॥
राग-द्वेष भय मोह मंद कर, आसक्ती कम कर डालो।
सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित की, नैया से भव तर डालो॥७॥

रत्नत्रय की मिले न नैया, राग-द्वेष भी मन्द न हो।
आसक्ति कम कर न सको तो, डरो न पर स्वच्छन्द न हो॥
तीनकाल के तीर्थंकरो के, भजन पाठ कर मगन रहो।
आज नहीं तो कल रत्नत्रय, धर 'सुव्रत' निज रमण करो॥८॥

(सोरठा)

महिमा अगम अगाध, निज पर के कल्याण को।
त्रयकालिक जिनराज, सादर तुम्हें प्रणाम हो॥

ॐ ह्रीं श्री त्रिकालसंबंधी चतुर्विंशति तीर्थंकरेभ्यो महासमुच्चय जयमाला पूर्णार्घ्यं....।

(दोहा)

त्रयकालिक जिनवर करें, विश्वशांति कल्याण।
प्रासुक जल की धार दे, हम पूजत भगवान॥

(शांतये शांतिधारा....)

कल्पवृक्ष के पुष्पसम, पुष्पांजलि पद लाय।
भवदुःखों को मेट दो, त्रयकालिक जिनराय॥

(पुष्पांजलिं.....)

-: प्रशस्ति :-

सिद्धक्षेत्र अतिशय जहाँ, मूल पार्श्व भगवान।
पूर्ण पवाजी में हुआ, त्रयकालिक ये विधान॥
दो हजार चौदह रहा, गुरु दस दस तारीख।
'विद्या' के 'सुव्रत' रचे, गुरु प्रभु को नत शीश॥

❑ ❑ ❑